टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे

एम. ए. हिंदी (भाग–२)

मई २०१० परीक्षा

विषय : आधुनिक काव्य (H-201)

दिनांक : १८/५/२०१० **कुलअंक : १००** **समय : दो.: २.०० से ५.००**

सूचनाएँ : १. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

२. सभी प्रश्नों के लिए समान अंक हैं ।

पाठ्यपुस्तकें–१) कामायनी–जयशंकर प्रसाद

२) संशय की एक रात– नरेश मेहता.

३) ग्राम्या–सुमित्रानंदन पंत

४) दिशांतर–संपा. श्रीवास्तव/तिवारी

५) यक्ष का संदेश–हरिनारायण व्यास (पुराना काव्य–संकलन)

६) जहाँ शब्द है। डॉ. प्रभाकर माचवे (नया काव्य–संकलन)

प्रश्न १. अ) 'कामयानी' महाकाव्य की कथावस्तु स्पष्ट कीजिए। **(२०)**

अथवा

ब) 'संशय की एक रात' काव्य ऐकांतिक आत्मचिंतन एवं सामूहिक दायित्त्व बोध की समस्या को अभिव्यक्त करनेवाला काव्य है' स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न २. अ) 'ग्राम्या' की कविताओं में भारत के ग्राम जीवन का प्रतिबिंब किन–किन रूपों में दिखाई देता है? **(२०)**

अथवा

ब) 'दिशांतर' काव्य संग्रह में संकलित अज्ञेय की काव्य रचनाओं की विशेषता एवं उनके कथ्य को सोदाहरण रेखांकित कीजिए।

प्रश्न ३. अ) 'यक्ष का संदेश' काव्य संकलन की कविताओं में अभिव्यक्त आधुनिकता बोध एवं मानवीय संवेदनाओं पर प्रकाश डालिए। **(२०)**

अथवा

ब) डॉ. प्रभाकर माचवे का काव्य संग्रह 'जहाँ शब्द है' में संकलित कविताओं की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

क) 'दिशांतर' काव्य संग्रह में संकलित रचनाकारों की कविताओं से अभिव्यक्त प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिए।

प्रश्न ४. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अवतरणों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । **(२०)**

१) हाहाकार हुआ क्रंदनमय
कठिन कुलिश होते थे चूर,
हुए दिगंत बधिर भीषण रव
बार बार होता था क्रूर ।

२) ओ मेरे विवेक ।
मुझसे मत प्रश्न करो
संशय की बेला अब नहीं रही।
अंतरीप जल में अब
सूर्योदय साक्षी हक
संशय की बेला अब नहीं रही।

३) मनुष्यत्व के मूलतत्व ग्रामों ही में
अंतर्हित
उपादान भावी संस्कृति के भरे
यहाँ अविकृत।

४) यह सब शठता हक्तेरी
आधुनिक सभ्यता के रोगी मन
सीख पुरातन शिशु निष्कपटी।
आयी आयी ट्रेन मचा हुरदंग,
किंतु वह चकमा ही था;
सिर्फ सचाई यही कि
भक् भक् करता जाता इंजन।

प्रश्न ५. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए। (२०)

१) श्रद्धा चरित्र चित्रण।

२) 'संशय की एक रात' में हनुमान का चरित्र।

३) 'यक्ष का संदेश' काव्य संकलन की विशेषता ।

४) 'जहाँ शब्द हर्वे संकलन की 'समाज परमेश्वर' कविता।